22

आनंदमयी कविता

चार दिशाएँ

0222CH22

उगता सूरज जिधर सामने
उधर खड़े हो मुँह करके तुम
ठीक सामने पूरब होता
और पीठ पीछे है पश्चिम
बायीं ओर दिशा उत्तर की
दायीं ओर तुम्हारे दक्षिण
चार दिशाएँ होती हैं यों
पूरब पश्चिम उत्तर दक्षिण।

—साभार, यू.पी. बोर्ड एवं एस.सी.ई.आर.टी., यू.पी.

© NCERT not to be republished

बातचीत के लिए

1. आप दिशा का अनुमान कैसे लगाते हैं?
2. नीचे कुछ शब्द दिए गए हैं। इन शब्दों से अपनी-अपनी कहानी बनाइए और कक्षा में सुनाइए।

आकाश	ओले	बादल	जंगल	मिलकर	जानवर	शेर
हाथी	लोमड़ी	डर	सुबह	खुशी-खुशी	नाचना	पहाड़

खेल-खेल में

एक गोले में बैठकर इस गतिविधि को कीजिए–

1. आपके दाईं ओर कौन-कौन से मित्र बैठे हैं?
2. आपके बाईं ओर कौन-कौन से मित्र बैठे हैं?
3. बाईं ओर से आप किस नंबर पर हैं?
4. दाईं ओर से आप किस नंबर पर हैं?

आइए, कुछ बनाएँ

छोटे समूहों में चारों दिशाओं के नाम लिखे हुए कार्ड्स बनाइए और दीवारों पर सही जगह लगाइए। चारों दिशाओं के लिए कुछ चित्र भी बनाइए।

© NCERT not to be republished

चंदा मामा

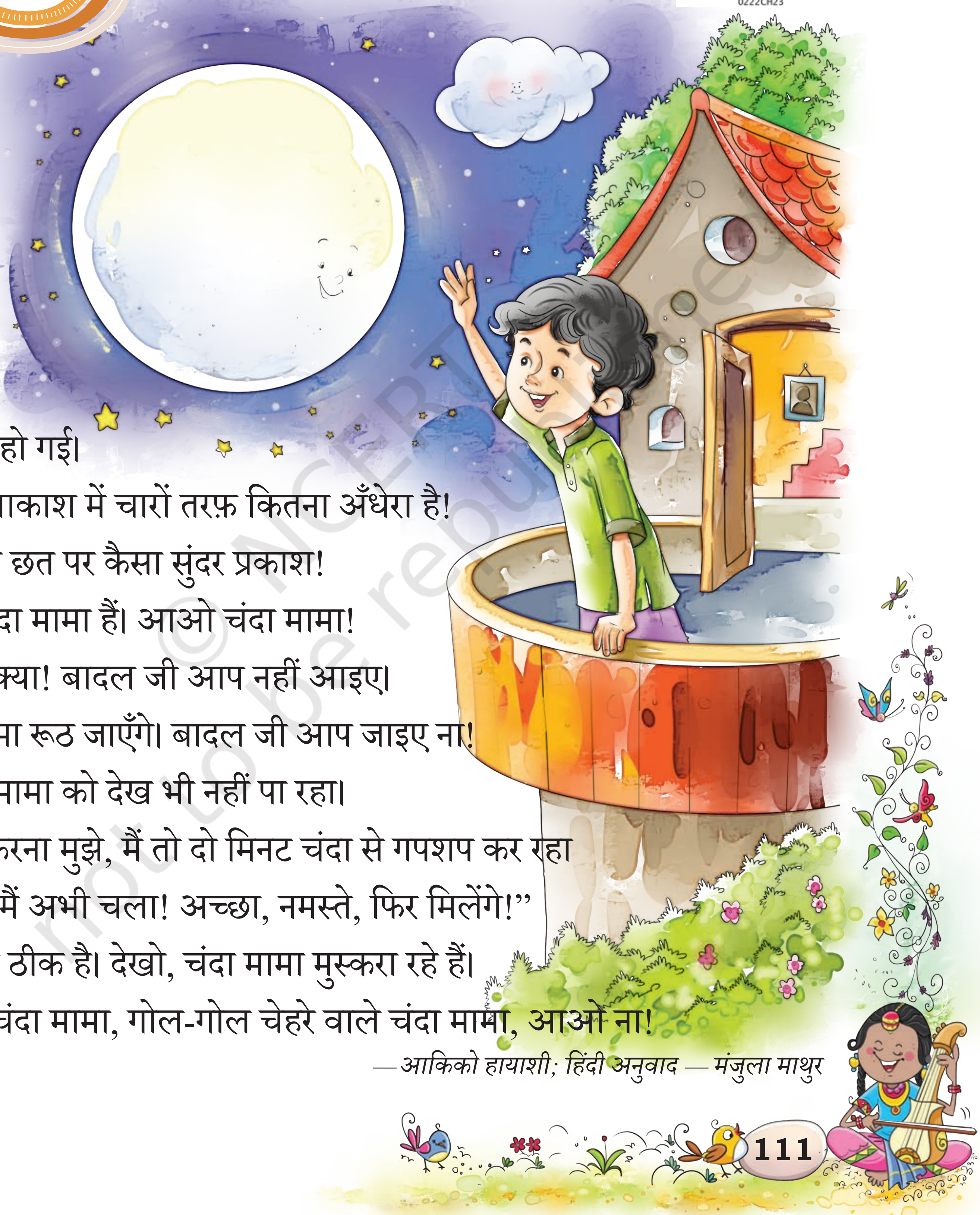

लो रात हो गई।
देखो, आकाश में चारों तरफ़ कितना अँधेरा है!
अहा! ये छत पर कैसा सुंदर प्रकाश!
तो ये चंदा मामा हैं। आओ चंदा मामा!
अरे, ये क्या! बादल जी आप नहीं आइए।
चंदा मामा रूठ जाएँगे। बादल जी आप जाइए ना!
मैं चंदा मामा को देख भी नहीं पा रहा।
"माफ़ करना मुझे, मैं तो दो मिनट चंदा से गपशप कर रहा
था। लो मैं अभी चला! अच्छा, नमस्ते, फिर मिलेंगे!"
हाँ, अब ठीक है। देखो, चंदा मामा मुस्करा रहे हैं।
आओ चंदा मामा, गोल-गोल चेहरे वाले चंदा मामा, आओ ना!

— आकिको हायाशी; हिंदी अनुवाद — मंजुला माथुर

© NCERT not to be republished

चित्रकारी और लेखन

'चंदा मामा' कहानी को चित्रों की सहायता से फिर से बताइए। कुछ वाक्य भी लिखिए–

....

....

....

....

© NCERT not to be republished

शब्दों का खेल

अक्षरों को क्रम में रखते हुए शब्द बनाइए –

त	रा		→	....
ल	द	बा	→	....
स्ते	म	न	→	....
स्क	मु	रा	→	....
शप	ग	प	→	....
अं	रा	धे	→	....

खोजें-जानें

रोज़ रात में चाँद को देखिए और चाँद का आकार बनाइए।

© NCERT not to be republished

शिक्षण-संकेत – बच्चों को यह गतिविधि एक महीने तक करने के लिए प्रोत्साहित कीजिए। चाँद के घटते-बढ़ते आकार के बारे में भी चर्चा कीजिए।

24

आनंदमयी कविता

गिरे ताल में चंदा मामा

गिरे ताल में चंदा मामा,
सबने देखा सबने देखा,
फँसे जाल में चंदा मामा,
सबने देखा सबने देखा।
सबने देखा एक अचंभा,
मछुआरे ने जाल समेटा,
कहीं नहीं थे चंदा मामा,
कहाँ गए जी चंदा मामा।

—राजेश जोशी

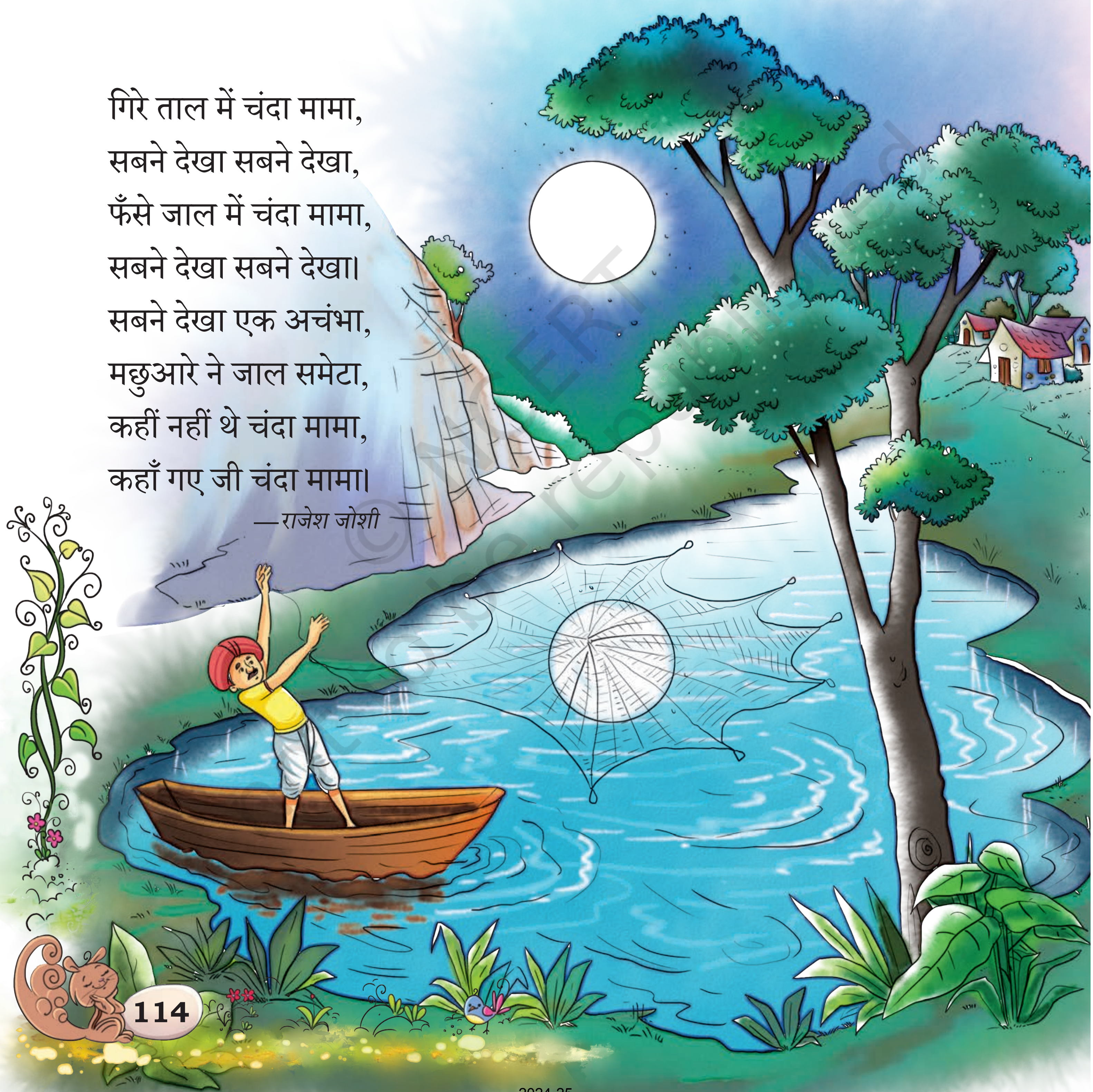

शब्दों का खेल

1. **कविता में 'अचंभा' शब्द आया है। कविता पढ़कर अनुमान लगाइए कि इस शब्द का अर्थ क्या हो सकता है?**
2. **नीचे दिए हुए किस वाक्य में 'अचंभा' शब्द का सही प्रयोग हुआ है?**
    - यह देखकर अचंभा हुआ कि सूरज प्रकाश देता है।
    - यह देखकर अचंभा हुआ कि चाँद रात में दिखता है।
    - यह देखकर अचंभा हुआ कि आधे मैदान में बारिश हुई और आधा मैदान सूखा था।
3. **इस कविता में चंदा मामा की जगह पर सूरज दादा कहकर इस कविता को पढ़िए। अपनी नई कविता को कॉपी में लिखिए।**

मिलकर पढ़िए

चाँद की रोटी,
पानी में आई,
मछली फिर भी,
खा न पाई।

— मोहम्मद साजिद खान

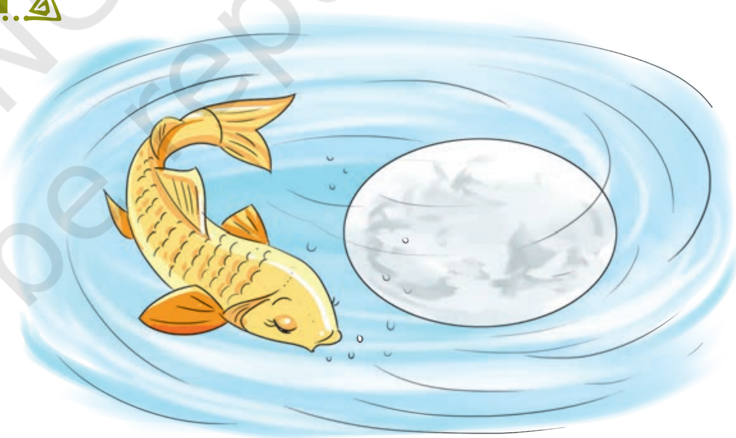

सोचिए और लिखिए –

1. चाँद की रोटी किसे कहा गया है?
2. मछली चाँद की रोटी क्यों नहीं खा पाई होगी?

शिक्षण-संकेत – बच्चे 'अचंभा' का जो भी अर्थ बताएँ, उस पर बच्चों से बातचीत कीजिए।

© NCERT not to be republished

25

मिलकर पढ़िए

सबसे बड़ा छाता

बारिश! झमा-झम बारिश!
लगातार बारिश!
छत पर झमा-झम। घर में टप-टप।
और आँगन में... छप-छपाक।
गीला हो गया बिस्तर,
अम्मा की साड़ी,
और दादी का कंबल।

गीला और सर्द
हो गया पूरा शहर।
लेकिन मैं, मेरे पास है छाता।
छाते के भीतर मैं और सलीम।
बिलकुल सूखे और गरम।

मैंने छाते में टिल्लू को भी बुलाया।
अब टिल्लू बिलकुल सूखा।
मैं और सलीम कुछ गीले-गीले से।

© NCERT not to be republished

मैंने दयाल चाचू से बड़ा
छाता माँग लिया।
अब सब छाते के अंदर।
फिर लता और मोनू भी आ गए।
बड़ा छाता पड़ गया छोटा।

दयाल चाचू से और बड़ा छाता
ले आए।
अब सब छाते के अंदर।
शलीन और सनत भी आ गए।
और बड़ा छाता पड़ गया छोटा।

दयाल चाचू से बहुत बड़ा
छाता ले आए।
अब सब छाते के अंदर।
सोनू, हामिद, हरमीत सब
के सब आ गए।
बहुत बड़ा छाता भी पड़
गया छोटा।

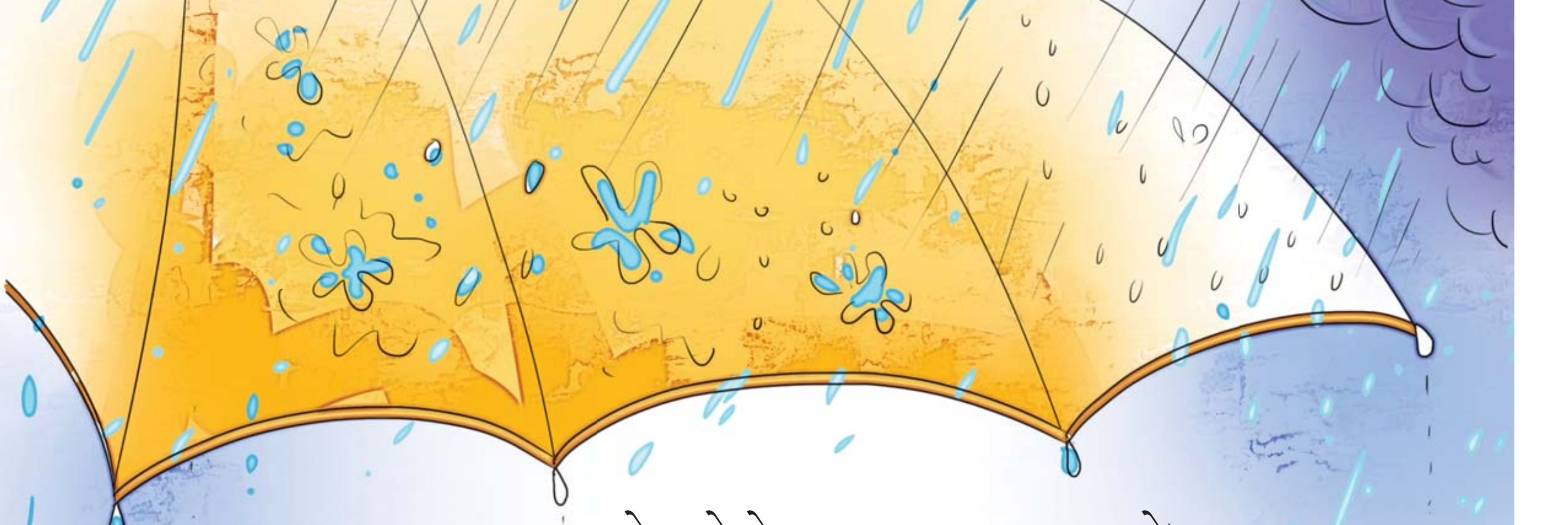

दयाल चाचू बहुत बड़े छाते से बहुत-बहुत बड़ा छाता दो।
दयाल चाचू ने कहा— इससे बड़ा छाता तो बनता ही नहीं।
बड़ा होकर मैं दुनिया का सबसे बड़ा छाता बनाऊँगा।
आसमान जितना बड़ा! जो बारिश में पूरे शहर को छुपा लेगा।
टिल्लू, सलीम, अम्मा, चाचू, राकेश, हामिद, हरमीत, शलीन
और सनत। सब होंगे छाते के भीतर। सूखे और गरम।
बारिश! झमा-झम बारिश!
घर में टप-टप।
और आँगन में... छप-छपाक।

—मनोज कुमार

(प्रकाशक: रूम टू रीड इंडिया ट्रस्ट)

© NCERT not to be republished

बातचीत के लिए

1. बारिश से जुड़े अपने अनुभव बताइए।
2. आप बड़े होकर क्या बनाना चाहेंगे?
3. क्या सचमुच कोई इतना बड़ा छाता बना सकता है कि पूरी दुनिया के बच्चे उसमें आ जाएँ?
4. छाते में ऐसा क्या होता है कि हम बारिश में भी गीले नहीं होते?

नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर अपनी कॉपी में लिखिए–

1. हर बार छाता क्यों छोटा पड़ता था?
2. हर बार बड़ा छाता कौन देते थे?
3. इस कहानी में आए सभी बच्चों के नाम लिखिए।
4. बारिश में क्या-क्या गीला हो गया?

© NCERT not to be republished

खेल-खेल में

वर्षा की बूँदें धरती पर गिरती हैं तो कैसी ध्वनि सुनाई देती है? इस तरह करके देखिए–।

1. आँखें बंद कीजिए और बाईं हथेली खोलकर रखिए।
2. दाएँ हाथ की तर्जनी से बाईं हथेली पर बजाकर देखिए।
3. फिर से दो उँगलियों से बजाकर देखिए।
4. फिर से तीन उँगलियों से बजाकर देखिए।
5. फिर से चार उँगलियों से बजाकर देखिए।

शब्दों का खेल

हर बार बड़ा छाता छोटा पड़ जाता था।

बड़ा और **छोटा** इन दोनों शब्दों के अर्थ एक-दूसरे से विपरीत हैं। जैसे दिन और रात।

नीचे दी गई तालिका से दिए गए शब्दों के विपरीत अर्थ वाले शब्द ढूँढ़कर लिखिए –

नी	इ	दो	दि	न	सो
से	चे	उ	जा	ला	ना
अ	च	बा	एँ	पा	जै
सो	ना	ल	सू	खा	स
बा	ह	र	अ	ने	क

ऊपर .... दाएँ ....

अंदर .... रात ....

एक .... दूर ....

अँधेरा .... गीला ....

पढ़िए, समझिए और लिखिए

1. दिन में सूरज, ... में तारे दिखते हैं।
2. .... बोलें, झूठ नहीं।
3. ऊपर आकाश और .... धरती है।

© NCERT not to be republished

नीचे दिए गए शब्दों की सहायता से पाँच से छह वाक्य लिखिए –

बारिश झम-झम छाता मित्र सहायता
दोपहर घर स्कूल छुट्टी

मैं स्कूल से घर आ रही थी / रहा था। ....

....

....

....

....

....

....

पहेली

तोते का प्यारा खाना है,
लेकिन मेरी सी-सी है,
इसका उत्तर दे सकते हो,
यह तो बात ज़रा-सी है।
....

चलती ही रहती है हरदम,
दिन हो, चाहे रात,
टिक-टिक-टिक बोला करती,
कहती है कुछ बात।
....

— श्रीप्रसाद

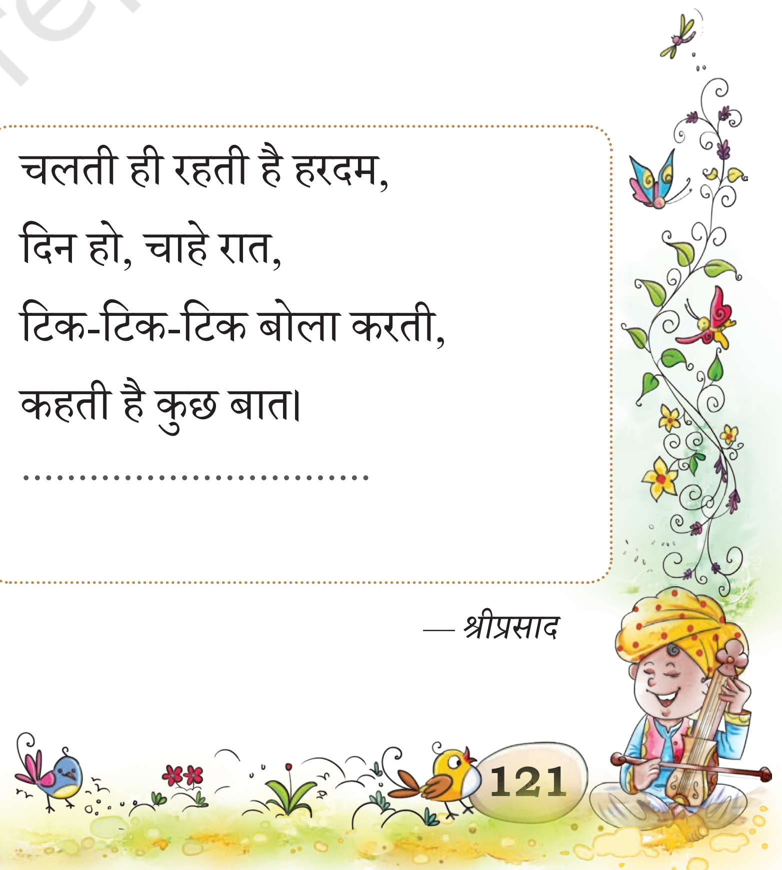

© NCERT not to be republished

2024-25

26

आनंदमयी कविता

बादल

काले-काले, पानी वाले
आसमान में बादल आए
बोलो, कैसे आकर छाए

हवा पकड़कर, लाती सर-सर
छाए जैसे काले कंबल
कितने सुंदर लगते बादल

पेड़ों जैसे, भेड़ों जैसे
लगते जैसे चलते घोड़े
बन जाते हाथी के जोड़े

नन्हे जल-कण, गए भाप बन
उसी भाप ने ठंडक पाई
बादल बरसे, बरसा आई

© NCERT not to be republished

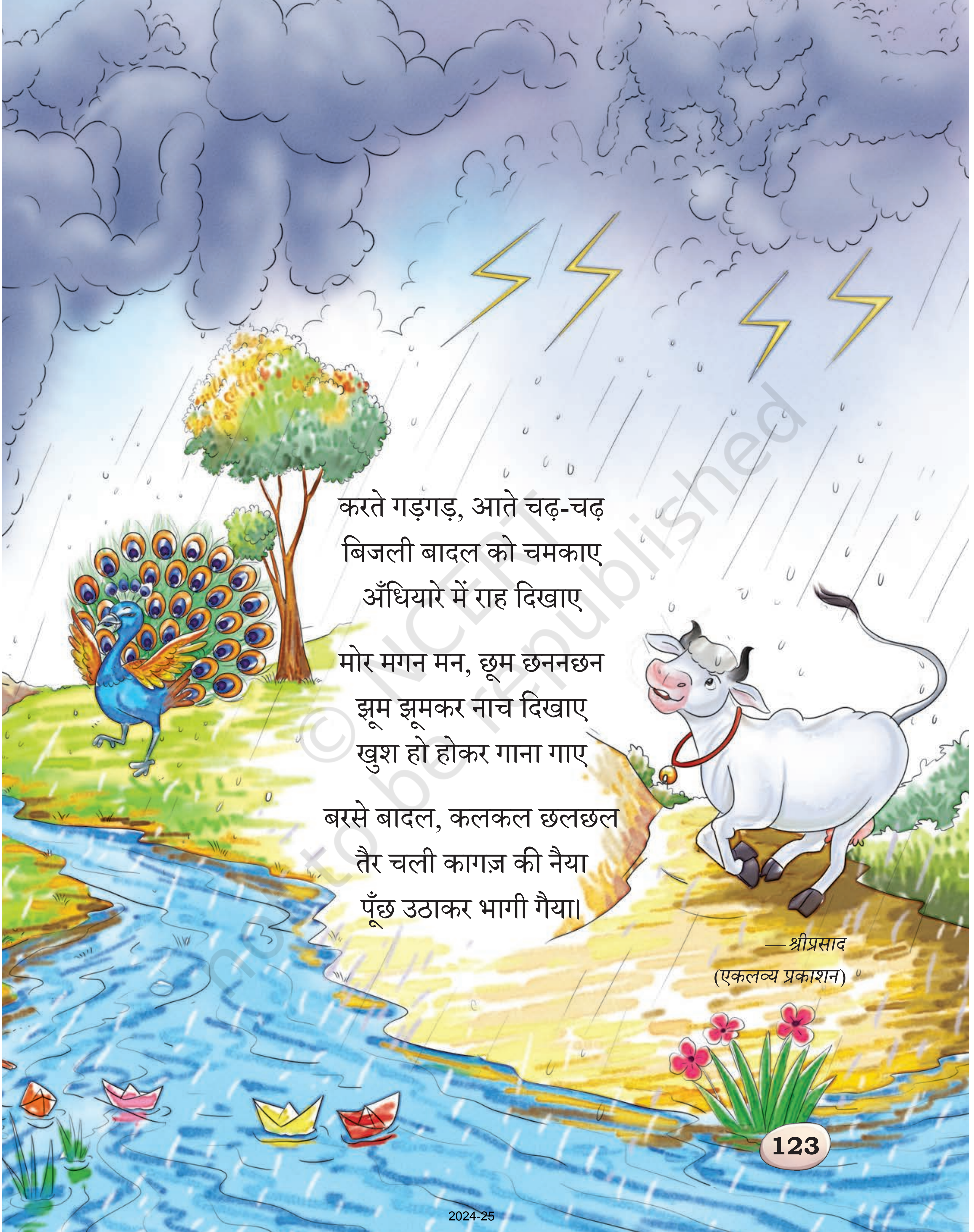

करते गड़गड़, आते चढ़-चढ़
बिजली बादल को चमकाए
अँधियारे में राह दिखाए

मोर मगन मन, छूम छननछन
झूम झूमकर नाच दिखाए
खुश हो होकर गाना गाए

बरसे बादल, कलकल छलछल
तैर चली कागज़ की नैया
पूँछ उठाकर भागी गैया।

—श्रीप्रसाद
(एकलव्य प्रकाशन)

© NCERT not to be republished

बातचीत के लिए

1. बारिश आने से पहले कैसा मौसम होता है?
2. बारिश कैसे होती है?
3. आपको बारिश के मौसम की सबसे अच्छी बात क्या लगती है?
4. क्या बारिश से कभी कोई परेशानी भी होती है?

कविता के आधार पर उत्तर लिखिए –

1. बादल कैसे बरसते हैं? ....
2. मोर कैसे नाचते हैं? ....
3. हवा कैसे चलती है? ....

चित्रकारी और लेखन

जब आसमान में बादल हों, आसमान को ध्यान से देखिए। आपको कौन-कौन से आकार दिखाई देते हैं? इन बादलों के आकारों के चित्र अपनी कॉपी में बनाइए। आसमान और बादलों के बारे में कुछ वाक्य भी लिखिए।

खोजें-जानें

समाचार पत्र में मौसम की जानकारी अपने मित्रों के साथ मिलकर पढ़िए।

शिक्षण-संकेत – समाचार पत्र पढ़ने में बच्चों की सहायता कीजिए। यह गतिविधि नियमित रूप से करवाएँ।

© NCERT not to be republished

शब्दों का खेल

1. ‘बादल’ शब्द सुनने पर आपको बिजली, मोर आदि की तरह अन्य कौन से शब्द याद आते हैं? इन शब्दों को लिखिए और आपके शब्द ‘बादल’ शब्द से कैसे जुड़ते हैं, सभी को बताइए –

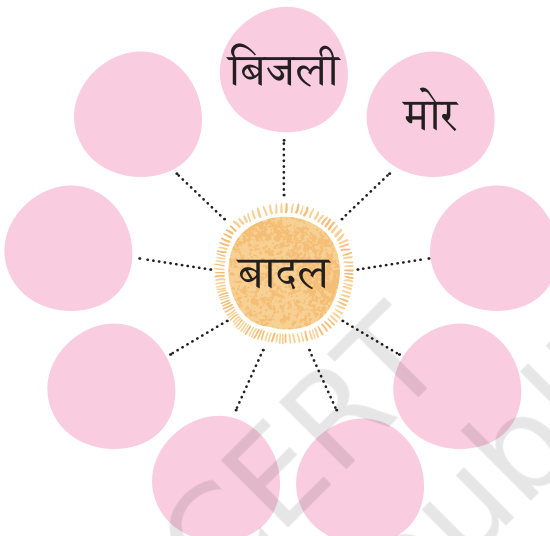

2. मिलान कीजिए और नए शब्द बनाइए –

मोर	मुखी	मोरपंख
रात	बहार	
सूरज	पंख	
नील	जामुन	
गुलाब	पत्र	
समाचार	गाय	
सदा	रानी	

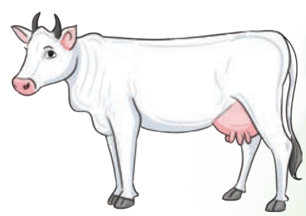

शिक्षण-संकेत – शब्दों को पढ़ने में और शब्द बनाने में बच्चों की सहायता कीजिए।

© NCERT not to be republished

3. कविता में देखकर सही शब्द चुनकर लिखिए –

(i) हवा .... लाती सर-सर।

(ii) नन्हें जल-कण गए .... बन।

(iii) .... मगन मन, ... छननछन।

(iv) बरसे .... कलकल .... ।

(v) तैर चली .... की नैया .... उठाकर .... गैया।

4. इन शब्दों को पढ़िए। बच्चों और वस्तुओं के नामों को अलग-अलग लिखिए –

टिल्लू शक्कर मुन्ना गन्ना लड्डू मक्खन मुन्नी
रग्घू हल्दी मुन्नू भुट्टा बस्ता पप्पू

बच्चों के नाम	वस्तुओं के नाम
....	....
....	....
....	....
....	....
....	....
....	....
....	....

शिक्षण-संकेत – आधे वर्णों की ध्वनियों को समझने में बच्चों की सहायता कीजिए।

© NCERT not to be republished

2024-25

5. नीचे दिए गए चित्रों का मिलान सही शब्द से कीजिए –

जल

वृक्ष

मेघ

पृथ्वी

लेखन

चित्र देखिए और दिए गए शब्दों से रिक्त स्थानों को भरिए –

पानी, बादल, भाप, बूँदें, गरमी

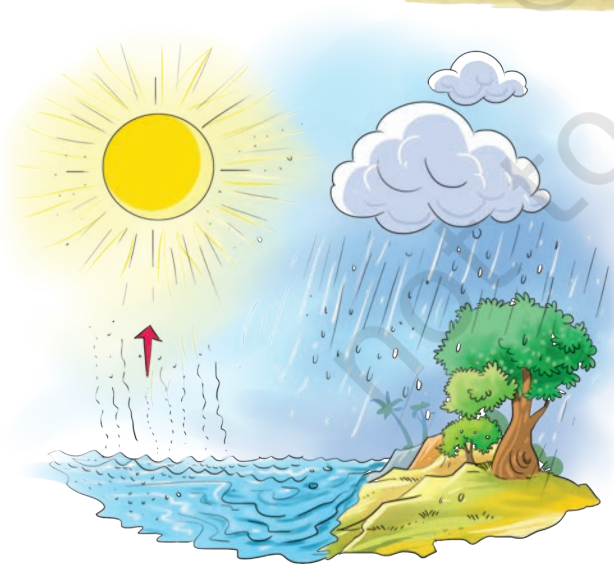

1. सूरज के प्रकाश से .... बढ़ती है।
2. गरमी पानी को .... बनाती है।
3. भाप ऊपर जाकर .... बनाती है।
4. बादल नन्हीं-नन्हीं .... बरसाते हैं।
5. नदी-नालों में .... भर जाता है।

© NCERT not to be republished

पहेली

1. काली भूरी नीली है,
लाल गुलाबी पीली है,
बरखा से यही बचाती है,
धूप नहीं आ पाती है।
रहती है सिर के ऊपर,
फैली रहती है तन कर,
सुंदर सी है, जानो तुम,
अपने सिर पर तानो तुम।

2. ऊपर देखो उड़ा जा रहा,
मुड़ा जा रहा अब ये,
लेकिन वापस भी आएगा,
मगर न जानें कब ये।
आसमान में उड़ जाता है,
डैने कितने भारी,
क्या चिड़िया है,
अरे नहीं, यह काफ़ी बड़ी सवारी।

—*श्रीप्रसाद*

© NCERT not to be republished

खोजें-जानें

कक्षा में अपने शिक्षक की सहायता से समाचार पत्र में बारिश / आसमान / चाँद / तारे आदि से संबंधित कोई समाचार पढ़िए।

चित्रकारी और लेखन

नीचे दिए गए चित्र में रंग भरिए। चित्र के आधार पर पाँच से छह वाक्य लिखिए–

शिक्षण-संकेत – इस तरह की गतिविधियाँ बच्चों से नियमित रूप से करवाएँ।

© NCERT not to be republished

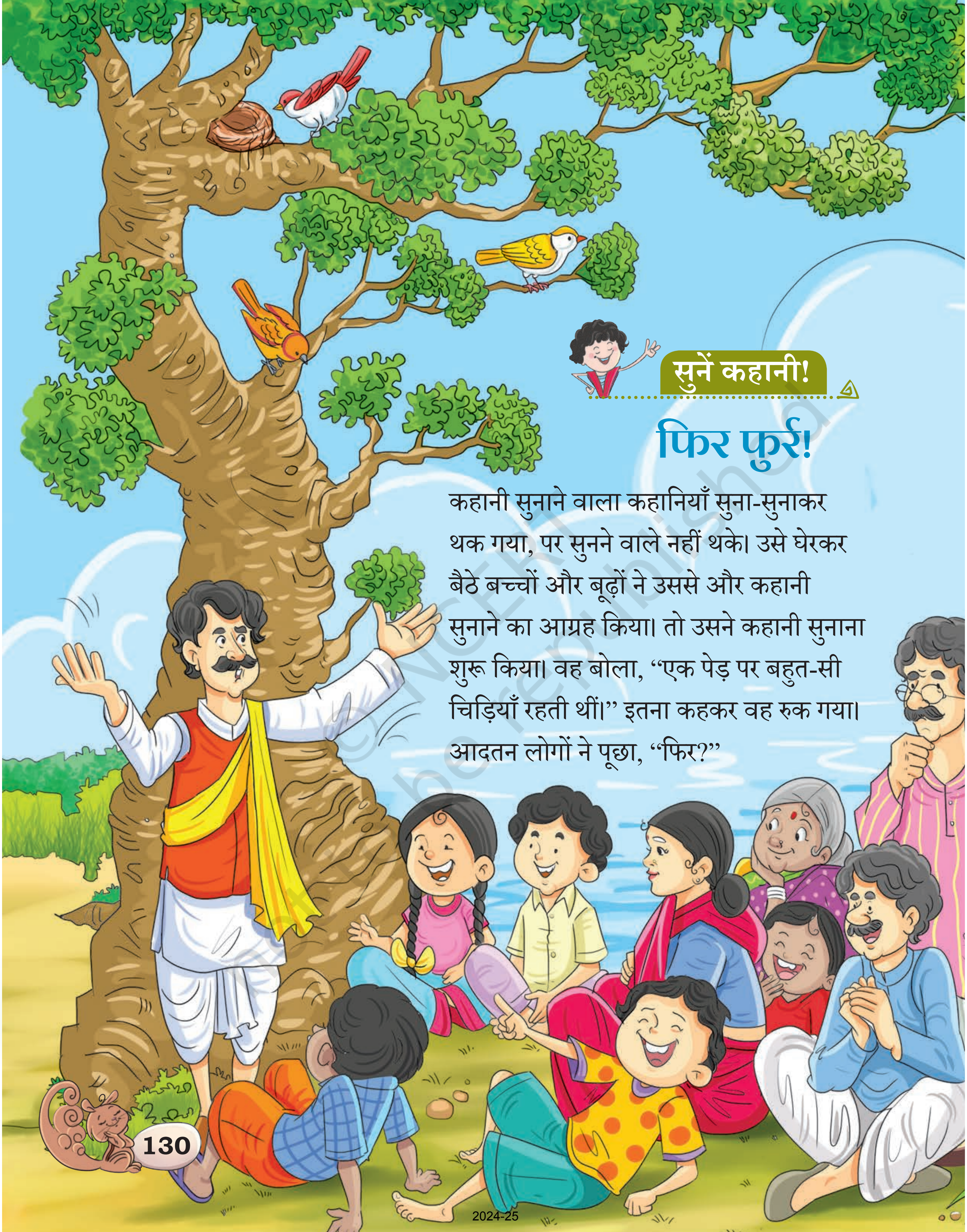

सुनें कहानी!

फिर फुर्र!

कहानी सुनाने वाला कहानियाँ सुना-सुनाकर थक गया, पर सुनने वाले नहीं थके। उसे घेरकर बैठे बच्चों और बूढ़ों ने उससे और कहानी सुनाने का आग्रह किया। तो उसने कहानी सुनाना शुरू किया। वह बोला, "एक पेड़ पर बहुत-सी चिड़ियाँ रहती थीं।" इतना कहकर वह रुक गया। आदतन लोगों ने पूछा, "फिर?"

© NCERT not to be republished

कहानी सुनाने वाले ने कहा, “एक चिड़िया पेड़ से उड़ी – फुर्र!”

“फिर?”

“फिर एक चिड़िया पेड़ से उड़ी – फुर्र!”

“फिर?”

“फिर एक चिड़िया पेड़ से उड़ी – फुर्र!”

“फिर?”

“फुर्र!”

बहुत देर तक यही चलता रहा। “फिर?” “फुर्र!” “फिर?” “फुर्र!” “फिर?” “फुर्र!” से लोग थक गए।

अंतत: एक बच्चे ने पूछा, “यह कब तक चलेगा?”

कहानी सुनाने वाले ने कहा, “जब तक सारी चिड़ियाँ उड़ नहीं जाती!”

— साभार, मराठी लोककथा, एनबीटी

© NCERT not to be republished

रंग भरिए

दिए गए चित्र में मनचाहे रंग भरिए –

© NCERT not to be republished